धार्मिक शक्तिपुंज की वास्तविक पहचान

बी. एल. गुर्जर
महादेव नगर, जगतपुरा,
जयपुर, राजस्थान

दुनिया की प्रचीनतम समृद्ध संस्कृतियों में शुमार भारतवर्ष पर हर देशवासी को गर्व है। कभी सोने की चिड़िया कहलाये जाने वाले इस देश की गिनती विश्व की सिरमौर अर्थव्यवस्थाओं में होती थी। हमारे प्राचीन वेदपुराण, खगोल शास्त्री, गणितज्ञ, आयुर्वेदाचार्य, अर्थशास्त्रीगण आज दुनियाभर के वैज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों एवं समाज शास्त्रियों के पथ प्रदर्शक है।

विश्व का नेतृत्व करने में सक्ष्म हमारी प्राचीन संस्कृति की अतुल्य परम्पराएं एवं रीति रिवाज कालांतर में पथ विमुख होकर वर्तमान में वर्षा ऋतु में नदियों में बाढ़ की भाति व्यर्थ में बह रही हैं। आज आवश्यकता है भारतीय धार्मिक शक्तिपुंज की वास्तविक पहचान करने की, ताकि हमारी संस्कृति का भव्य मूलरूप सामने आ सके एवं पुनः यह देश दुनिया का सिरमौर बन सके।

जिस तरह नाली के किनारे रहने वाले लोगों को नाली की दुर्गन्ध का आभास नही होता है उसी तरह अनुत्पाकता को बढ़ावा देने वाली परंपराओं एवं रीतिरिवाजों का हमे आभास ही नही होता है। आज के परिपेक्ष में जिन सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजों पर खुली सामाजिक बहस एवं विवेचना की आवश्यकता है उनमें प्रमुख हैं जन्म, मरण एवं विवाह के समय के रीति रिवाज, साल के 365 दिन में से 360 दिन मनाये जाने वाले व्रत, प्रदोष एवं त्यौहार, कार्य सिद्धि एवं मनोकामनाओं की आपूर्ति हेतु बाबाओं, महात्माओं एवं ओझाओं की शरण, स्वयंभू भगवानों की बाढ़, धार्मिक स्थलों पर विभिन्न पर्वो पर एकत्रित अनियंत्रित भीड़, कुछ तथाकथित साधुसंतों द्वारा फैलाएं जाने वाले अंधविश्वास एवं कर्महीनता आदि। एक विस्तृत राष्ट्रीय बहस के आधार पर हमें यह निर्धारित करना होगा की कही जनसामान्य के लिए यह ओवरडोज तो नही है एवं हमारी प्रगति में बाधक तो नही है।

साधूसंतो की विशाल संख्या को देखते हुए भारतवर्ष को धार्मिक गुरूओं की धरती कहा जाता है। इनमें से अनेको ने उच्चस्तरीय व्यक्तिगत आदर्श एवं त्याग के

प्रतिमान स्थापित किये हैं। इनमें से अनेको में उच्च शैक्षणिक क्षमता है एवं सामाजिक बुराईयों को खत्म करने की अद्भुत क्षमता है। पर क्या इन साधुसंतों की इस विशाल क्षमता का राष्ट्रहित में समुचित उपयोग हो रहा है। वर्तमान में ये साधुसंत आध्यात्मिकता एवं पंथ विशेष में विश्वास करने वाले कुछ लोगो की धार्मिक पिपाषा की संतुष्टि के साधक मात्र है। राष्ट्रहित में हमारे साधुसंतो की उपादेयता शिक्षा प्रसार एवं सामाजिक बुराइयों को दूर करने में बहुत अधिक हो सकती है एवं राष्ट्र निर्माण में इनका बड़ा योगदान हो सकता है।

इस हेतु स्वयं साधुसंतो एवं समाज दोनो को अपना नजरिया बदलने के क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। हमारे महान साधुसंत अपने मठों, पीठों एवं स्थापित स्थलों को छोड़ कर पिछड़े मोहल्लों एवं गांवों का रूख करें। जन सामान्य, गरीबों एवं दलितों के बीच जाकर ये शिक्षा का अलख जगाएं एवं सामाजिक बुराइयों एवं दुव्यसनो यथा मदिरापान आदि को समूल नष्ट करें। सरकार एवं समाज को भी इन महापुरूषों को यथा संभव सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। इससे स्वतः ही पाखंड एवं अंध विश्वास पर नियंत्रण होगा एवं कर्मवाद का सिद्धांत प्रतिपादित होगा। किसी भी सरकार की सफलता इसी में है कि हमारे साधुसंतो की विशालकाय शक्ति का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करें।

आजकल हमारे यहां पदयात्राओं का अलग ही दौर चल पडा है। धार्मिक आस्थाओं के चलते विभिन्न पंथो के अलग-अलग अनुयायी लाखों करोडों की संख्या में विभिन्न शहरो, कस्बों से होते हुए कई दिनों तक सैकडों किलोमीटर की पद यात्रा करते है। इनमें से अधिकांश युवा वर्ग के लोग होते हैं। इन लोगो में धार्मिक उत्साह इस कदर होता है कि ये सारे रास्ते लाउड स्पीकर के साथ नाचते गाते चलते है। जगह जगह लोग इनके स्वागत में सड़क किनारे, कैम्प लगाकर स्वागत करते है तथा फलों एवं अन्य खाध्य/पेय पदार्थो से उनकी मनुहार करते है। धार्मिक आस्था में लोग यह इतने मशगूल रहते है कि इन्हे अन्य राहगीरो एवं स्थानीय वाशिंदों को होने वाली ट्राफिक जाम ध्वनि प्रदूषण, आदि का ध्यान ही नही रहता। आस्था के समुद्र में डूबी इस विशाल जनशक्ति को राष्ट्रहित में मोडने की आवश्यकता है। इस हेतु विभिन्न धर्मगुरू अपने अनुयायियों को यह समझाएं कि पदयात्रा के दौरान होने वाले समय

को मन ही मन अपने आराध्यदेवी/देवताओं को स्मरण करते हुए पिछड़े शहरी मोहल्लो एवं गॉवों में कार सेवा के माध्यम से स्वच्छता अभियान, जरूरत मंदो की सेवा आदि में लगाएं तो उनका पुण्य कार्य सोने में सुहागा होगा। ईश्वर भी उनके कार्य से प्रसन्न होकर उनके मन की मुरादपूरी करेंगे। इस कदम से हमारे प्रिय प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत अभियान को गति मिलेगी एवं अन्य राष्ट्रों की भॉति हमारे गली मोहल्ले चमकने दमकने लगेंगे। इसके लिए विभिन्न पंथो की एक समन्वय समिति बनाई जा सकती है जो अलग–अलग समूह के पदयात्री/कार सेवको का रजिस्ट्रेशन करें एवं आवश्यकतानुसार उन्ही गली मोहल्लों/गांवों का आवंटन करें। निसंदेह मोहल्लावासी भी उनकी आवभगत में कोई कसर बाकी नही रखेगें एवं कार सेवकों के साथ वहां के मूल निवासी मिलकर उस स्थान का कायाकल्प कर देंगे।

धर्मगुरूओं को धार्मिक स्थलो पर चढावें आदि को लेकर जन सामान्य में नयी चेतना पैदा करने की आवश्यकता है। चढ़ावे में अर्पित कोई भी भोज्य पदार्थ या वस्तु व्यर्थ नही जाये इसलिये मूर्ति पर सांकेतिक रूप से अत्यल्प वस्तु का अर्पण कर बचे हुए खाध पदार्थो यथा दूध, दही तेल, घी, फल एवं अन्य साध पदार्थो का स्वच्छ स्थान पर संग्रहण कर तुरंत उन्हे गरीबों एवं जरूरतमदों तक पहुचाने की व्यवस्था करवाई जाये जहां उसका सही उपयोग हो सके। अमीर अनुयायियों द्वारा प्रतिवर्ष सोने चांदी एवं रूपये पैसे के रूप में अरबो रूपयों का खजाना देवी देवताओं को अर्पित किया जाता है। यदि ऐसे संपन्न अनुयायी अपने आराध्य देव के नाम पर मेधावी गरीब छात्रों की पढ़ाई पर, दलितो के उत्थान पर, असाध्य रोगियों के इलाज, वृद्धो, विधवाओं के पुनरोत्थान एवं उनके लिए स्वरोजगार आदि पर खर्च करें तो उन पर अधिक ईश्वरीय कृपा होगी एवं राष्ट्र निर्माण में भी उनकी भूमिका होगी।

विशुद्ध व्यावहारिक आधार पर धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं एवं रीति रिवाजो का राष्ट्र हित एवं मानवता की प्रगति में तथ्यात्मक विश्लेषण करने के उपरान्त आवश्यकतानुसार परिवर्तन करने से हम हमारी संस्कृति में मूलरूप से समाहित धार्मिक शक्ति पुंज की वास्तविक पहचान कर सकेंगे एवं राष्ट्र की प्रगति को गति प्रदान कर सकेंगे। श्रीमद्भागवत गीता का मूल संदेश भी यही है।

****